INDIAN STREAMS RESEARCH JOURNAL

'टेम्स की सरगम' में नारी संवेदना की बहुलता

प्रियंका , हरदीप समरा

रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग, लवली प्रॉफेश्नल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)

प्रस्तावना :

संसार के आरंभ में ही मानव अपनी संवेदना को अभिव्यक्त करने के लिए सजग रहा है। नारी की भावना के साथ शुरू से ही पुरुष खिलवाड करता आया है। भारत में स्त्रियों की स्थिति परिवर्तनशील रही है, बीसवीं सदी की शुरुआत से ही नारी की स्थिति सही नहीं थी। हमारे समाज में हमेशा पुरुष प्रधान रहा है। नारी को पहले भी कई अत्याचारों का सामना करना पडता था और आज भी करना पड रहा है। हिन्दी साहित्य में रचनाकारों की कलम से नारी के जीवन की विभिन्न संवेदना का कोई पक्ष अछूता नहीं रहा है। प्रत्येक युग में नारी की कई प्रकार की भावना एंव संवेदना की स्थितियों को साहित्यकारों ने अपनी लेखनी के माध्यम से उल्लेख किया। उन्हीं में से एक रचनाकार 'संतोष श्रीवास्तव' जी ने अपने उपन्यास "टेम्स की सरगम" में नारी की विभिन्न भावों एंव संवेदना को प्रस्तुत किया हैं। इन्होंने नारी की संवेदना को पुरुष के द्वारा कई बार ठेस पहुंचाते हुए चित्रित किया है जिसमें हवस के पुजारी और वासना को शांत करने वाले नारी का इस्तेमाल कर मनुष्यता को कलंकित करते है। कहीं नारी पर पति द्वारा हो रहा शारिरिक शोषण को चित्रित किया, तो कहीं पुरुष द्वारा किसी दूसरी असहाय स्त्रियों के साथ बलात्कार कर उनकी संवेदना को अपने पांव तले कुचलता हुआ दिखाया। पुरुष द्वारा शोषित होने के कारण स्त्री को कई तरह की मानसिक वेदना एंव पीडा को ना चाहते हुए भी सहना पडता था। एक प्रेमिका के रूप में नारी प्रेम संवेदना के आवेग में टेम्स नदी की भांति बहती चली जाती है। संतोष जी ने इस उपन्यास में नारी के कई रूप एंव संवेदना की बहुलता को सशक्त ढंग द्वारा चित्रित किया।

जब किसी भी स्त्री का शारीरिक शोषण हो तो उसके शरीर को कष्ट पहुंचता है, जिसके कारण नारी के मन की संवेदना पर गहरा प्रहार होता है। शारीरिक शोषण के लिए भौतिक साधन एंव हाथ-पैरों के शारीरिक साधन का इस्तेमाल किया जाता है। जिस प्रकार एक शत्रु अपने प्रतिद्वबन्दी को दुर्बल जानकर और भी उसके सिर पर चढ जाता है,ठीक उसी प्रकार से शोषक प्रकृति के पुरुष एक नारी को असहाय समझकर उनके ऊपर हावी होकर जबरदस्ती करने पर आतुर हैं। शारीरिक शोषण सहने वाली नारी अपनी ज़िन्दगी में घुटन महसूस करती हुई असन्तुष्ट और हताश सी हो जाती है। प्राचीन काल से नारी पुरुष द्वारा शारीरिक शोषण का शिकार होती आ रही है और वर्तमान युग में भी इसी के कारण उनकी संवेदना के साथ बार-बार खिलवाड किया जाता है। आज नारी बाहर ही नहीं अपितु घरों में भी सुरक्षित नहीं हैं, वह आज भी अपने परिवार के किसी सदस्य के द्वारा शोषित एंव

प्रताडित की जाती है। वर्तमान में कई कानून बनाए गए हैं लेकिन फिर भी नारी पूरी तरह से ना घर ओर ना बाहर सुरक्षित है।

हिन्दी साहित्य में अनेक ऐसे महिला तथा पुरुष कथाकार हुए जिन्होंने नारी की संवेदना के हर पहलू को समाज के सामने उघाड कर रखा। नारी की संवेदना और सामाजिक मूल्यांकन पुरुष उसके मन से नहीं अपितु उसके शरीर का मूल्यांकन करता है। संतोष जी के उपन्यास में प्रमुख पात्र डायना के साथ उसका पति उसके साथ बलात्कार करता है। वह अपने ही घर शारीरिक शोषण का शिकार होती रही। उन दोनों में प्रेम का नहीं अपितु देह का संबंध होता है, जो कि सामाजिक बंधनों के कारण रिश्ता निभाने में मजबूर है। उसके पति टाम के द्वारा इस व्यवहार से उसकी भावना टूट के चूर हो जाती है। "वह पत्नि होने का दंड भुगत रही थी। टाम बस देह पर हक जताता है और डायना को महसूस होता है जैसे हर बार वह उसका बलात्कार कर रहा है। एक पल को भी तो टाम उसका हो न सका जबकि उसने टाम को अपना बनाने की तमाम कोशिशें की लेकिन हर बार उसका दिल टूटा...हर कोशिश में उसे हार मिली।"[1] वर्तमान में भी सामाजिक स्थिति तथा सदियों की गुलामी, बलात्कार, प्रताडना स्त्री की संवेदना और आत्मविश्वास को छीनता आया है। आदमी की निगाह में औरत शरीर मात्र है,सेक्स है,वहीं से उसकी आजादी की चेतना और स्वच्छन्द व्यवहार पैदा होता है। आज भी औरत की देह का इस्तेमाल पुरुष अपने मज्जे के लिए कर रहा है,उसे स्त्री अपने तन की आग बुझाने के लिए चाहिए। नारी की संवेदना में पुरुष के प्रति क्या छवि बनेगी इसकी परवाह वह नहीं करता।

संतोष जी ने नारी की विभिन्न भावना एंव संवेदना और जिन्दगी जीने की कठिनाई के हर मोड को अपनी रचना के माध्यम से सशक्त ढंग से प्रकाशित किया। संतोष श्रीवास्त्व जी के उपन्यास में भी टाम पात्र अपनी पदवी के बल पर विवाहित नादिरा पात्र की कमज़ोरी का फायदा उठा कर उसके साथ जबरदस्ती करता है। वह अपने पति को भी इस हो रहे जुल्म के बारे में नहीं बता पाती और इस जुल्म को चुपचाप निरन्तर सहती है। वह पुलिस कमिश्नर की पत्नि थी इसलिए वह इस बात का फायदा उठाता रहा कि वो इज्जत के कारण किसी को नहीं बताएगीं। उसने कभी नहीं सोचा था कि उसकी शादीशुदा जिन्दगी में ऐसा जहर घुलेगा। "नादिरा लड्खडा गई- "मिस्टर टाम,यह क्या...।" लेकिन बात अधूरी छूट गई। उसके होठों पर टाम के होठों का कसाव था। वह छटपटाकर परे हटी और घूर घूर कर टाम को देखने लगी। लेकिन टाम होश में कहां था। उसने गोद में नादिरा को उठाया और सीधा उसके शयनकक्ष में दाखिल हो गया।"[2] वर्तमान में भी नारी शोषण को सिर्फ इसलिए सहती है क्योंकि उसे समाज में शर्मसार ना होना पडे, उसकी इज्ज़त पर कोइ ऊंगली ना उठाये। इसी बात को लेकर प्रत्येक बार स्त्री की भावना को पुरुष मक्खी की तरह मसल कर रख देता है। पुरुष प्रधान आज के युग में भी कहीं न कहीं अपने उच्च अधिकारों की धौंस जमाकर नारी की संवेदना को अपमानित करता जा रहा हैं। आधुनिक युग में भी नारी के साथ समाज में बलात्कार, शारीरिक शोषण, औरतों के साथ अभद्र व्यवहार में दिन पर दिन बढोतरी हो रही है।

नारी की संवेदना हमेशा साहित्य और समाज का केन्द्रीय कथ्य रही है। पुरुष जाति ने हमेशा से ही नारी को कमज़ोर समझकर प्रत्येक समय उसको शारीरिक रूप से शोषित किया। स्त्री का जीवन अभिशापग्रस्त हो चुका है। संसार में हर क्षेत्र में नारी पुरुष की समानता की भावना समाज द्वारा स्वीकार की जा चुकी है, किन्तु फिर भी पुरुष प्रधान नारी की भावना को कुछ नहीं समझता। स्त्री को पुरुष की अधीनता स्वीकार करनी पढती है। लेनिन ने कहां है कि- "औरत की हालत सभी जगह एक-सी है चाहे वह राजकुमारी हो या नौकरानी, वह हमेशा पुरुष के तेवर देखकर चलती है,उसकी इज़्जत उसके चाहने न चाहने पर है। उसकी प्रतिष्ठा और उसकी शरीरिक शुद्वता परंपरागत मान्यता पर है।"[3] कैसे भी हालात एंव स्थिति हो नारी को समाज के कारण पुरुष के आगे झुकना पडता था। सदियों से नारी पुरुष के सामने लाचार होकर अपनी संवेदना का गला घोटती आई किन्तु आज कुछ हद तक परिस्थितियां बदल रही हैं।

स्त्री की मानसिक वेदना मानसिक वेदना को हम दिमागी वेदना एंव शोषण भी कह सकते हैं। मानसिक वेदना से भरी नारी के मन में अनेको विचार, अनसुलझे वैचारिक सवाल उथल-पुथल मचाने लगते है। जब किसी पुरुष द्वारा दिमागी तौर पर नारी के ऊपर दबाव डाला जाए तो वह तनावग्रस्त हो जाती है। जिससे नारी की मानसिक संवेदना को आघात पहुंचता है तो वह अपने दिमाग की सारी शक्ति व्यर्थ की बातें सोचने में गवा देती है तथा अपने आपको कई प्रकार के दुखों में महसूस करती है। "टेम्स की सरगम" उपन्यास में संतोष जी ने नारी की मानसिक वेदना को भी दर्शाया है। स्त्री का मन संभावनाओं से भरा पडा है। समाजिक मंशा नारी को कुंठित जीवन जीने के लिए मजबूर कर देती है। डायना का पति टाम उसे प्रेम नहीं करता बल्कि उसके जिस्म और धन से प्रेम करता है। "वह जान गई थी कि जीवन के सफर को तय करने के लिए उसने हमसफर ही गलत चुना...चुना नहीं..चुन दिया गया। उसके पिता ने टाम में न जाने कौन-सी अच्छाई देखी थी।टाम उसके हुनर, उसकी भावनाओं के तो बिल्कुल भी योग्य नहीं।टाम की दुनिया छोटी-सी है जिसमें केवल धन के लिए अथाह मोह है और अपने मालिक होने का घंमड है।"[4] प्रत्येक समय वह इसी वेदना से गुजरती की उसके पिता ने पता नहीं टाम से उसकी शादी क्यों करवाई। स्त्री अनेक सपनें बुनती है लेकिन प्रत्येक बार पुरुष उसकी संवेदना को रेत की चट्टान की तरह तहस-नहस कर देता है जिसके फलस्वरुप नारी की मानसिक वेदना की धारा प्रवाहित होने लगती है।

इस उपन्यास में संतोष जी ने प्रमुख नारी पात्रा डायना को मानसिक वेदना से जूझती हुई दिखाया है कि एक और उसका पति शरीर का भूखा दूसरा उसका प्रेमी जोकि उसे इतना प्रेम करता है। वह हमेशा अपने पति की शारीरिक भूख का शिकार होती रही। उसके मन में अपने पति के लिए कोई भावना नहीं थी। वह अपने आप से घृणा करने लगी थी कि वह कैसी जिदंगी जी रही है। वह हमेशा उदास रहती थी कि वह ऐसी जिंदगी जी रही है जिसमें वह दिन पर दिन झुलसती जा रही है। "हे प्रभु,यह कैसी उसकी नियति कि एक और प्यार से लबालब खजाना उसके इंतजार में है तो दूसरी तरफ वासना की वह आग जो उसे लील जाने को आतुर है।उस आग की लपटों में झुलसकर क्या वह साबुत बच पाएगी? और क्या अपना खंडित स्वरुप अपने चंडीदास के चरणों में आर्पित करेगी?डायना का सिर चकरा गया। अचानक उसे सिरदर्द महसूस हुआ और वह सिर पकडकर वहीं सोफे पर लेट गई।"[5]

पति और और पत्नी के संबंधों को संवेदनशील माना गया है। सामाजिक दर्शन विवाहित स्त्री का किसी और पुरुष के साथ सम्बन्ध अवैध करार देता है। इस उपन्यास में नारी भी ऐसी स्थिती में है कि वो अपने प्रेमी की और जाना चाहती है। परन्तु समाजिक बंधन के कारण अपने पति द्वारा बलात्कार को भी सहने को विवश है। मानसिक वेदना शारीरिक वेदना से भी कहीं अधिक कष्टदायक होती है। वेदना के इलावा ऐसी कोई चीज नहीं है जो नारी की आत्मा को खींचकर बाहर निकाल सके।

व्यक्तित्व की पहचान व्यक्तिव को अंग्रेजी में पर्सनेल्टी (Personality) कहते है। इस शब्द की उत्पत्ति यूनानी भाषा के "पर्सोना" से हुई है, जिसका अर्थ है "मोखौटा" (Mask) व्यक्तित्त्व की पहचान अर्थात्त अपने आपकी पहचान "स्व" की पहचान करना। अपने अस्तित्व को जानने की जिज्ञासा मानव के लिए महत्वपूर्ण कार्य है जो जीवन को सत्य, शिव, और सुन्दर बना देता है। स्व की पहचान, अपने होने का बोध करना। नारी का व्यक्तिव शारीरिक और मानसिक संवेदना से ही नहीं बल्कि सामाजिक एंव राष्ट्र संवेदना के समावेश से भी होता है। समाज एंव राष्ट्र के सम्पर्क में आने पर ही मानव में परिर्वतन आने लगते है। संतोष जी के उपन्यास में व्यक्तित्व की पहचान को भी दर्शाया गया है। इसकी दूसरी प्रमुख पात्रा रागिनी अपने अस्तित्व को जानने के लिए उत्सुक रहती है। वह अपने नाम को लेकर अपनी आंटी से सवाल पूछती है कि उसका नाम रागिनी रोज कैसे पडा। वह अपने माता पिता के बारे में जानने की कौशिश करती है। उसके मन में अपने नाम को लेकर कई सवाल उठते है। "लेकिन इस्लाम में काबे के पानी

भरे रास्ते को समीरा कहते हैं।मेरा नाम समीरा खान है,लोग मुझे समीर कहते हैं।तुम्हारे दो नाम क्यों हैं...ब्रिटेन और इंडिया के।" "यह प्रश्न तो रागिनी को कुरेदता है।रागिनी हिंदुस्तानी नाम है और रोज विलायती।दीना ने बताया था।"[6] वर्तमान युग में भी नारी अपने रिश्ते-नाते, देश, समाज,धर्म,सग्गे सम्बन्धियों को लेकर अपनी पहचान करती है। वह अपने अस्तिव को लेकर हमेशा सजग रहती है।

मृणाल पाडे ने कहा-"मैं यह नहीं कहती कि पुरुष के बदले अब स्त्री का वर्चस्व स्थापित होना चाहिए।ज़रुरत तो इस बात की है कि स्त्री का स्वंय अपने बारे में सोचने-विचरने एंव निर्णय का अधिकार मिले।"[7] हर व्यक्ति को अपने जन्म स्थान तथा नाम के बारे में जानने की जिज्ञासा होती है। जब भी नारी अपने अस्तिव की खोज करती है तो सब कुछ जान लेने के बाद उसके मन की संवेदना को संन्तुष्टि मिलती है।

नारी का पुरुष के प्रति प्रेम पूरे विश्व का व्यापक तथा महत्त्वपूर्ण प्राण तत्त्व है। प्रेम ही एक ऐसा तत्त्व है जिसमें सृष्टि की रचना निहित है। सच्चे प्रेम को वहीं व्यक्ति अपनी जिन्दगी में पा सकता है जिसने अपनी आत्मा को पूर्णता से जान लिया हो। प्रेम की भावना सिर्फ प्रेमी एंव प्रेमिका के लिए व्यक्तिगत नहीं बल्कि सर्वाजनिक होती है। मन्नू भंडारी जी अपने कहानी साहित्य में प्रेम के सम्बन्ध में लिखती है।

"नारी प्रेम प्राप्त करना ही नहीं देना भी चाहती है,बल्कि उसके मन में देने की आकुलता अधिक विद्यमान रहती है।"[8] प्रत्येक नारी के दिल में प्रेम भाव भरा पडा होता है और प्रेम एक सुखद अहसास है जिसमें त्याग,समर्पण है। प्रेम, नारी-जीवन का मूल आधार है तथा नारी की जिन्दगी को सरल एंव सुखद बनाने में प्रेम की अहम भूमिका होती है। प्रेम में स्वार्थ भावना नहीं होती सिर्फ और सिर्फ सम्पर्ण की भावना होती है।नारी के जीवन में प्रेम मूल्यों का महत्त्वपूर्ण स्थान है। संतोष जी ने इस उपन्यास में नारी के प्रेम संवेदना को मन को गहराई से प्रस्तुत किया है। प्रमुख नायिका डायना शादीशुदा होते हुए भी किसी और से प्रेम कर बैठती है।उसका प्रेमी भी उसे प्रेम करता है। वह दोनों प्रेम की अथाह नदी में वह जाते है और समाज की परवाह तक नहीं करते है। वह अपने पति से घृणा करती थी,क्योंकि उसका पति उससे प्रेम नहीं करता बल्कि उसकी दौलत और शरीर से प्रेम करता है। डायना अपने प्रेमी चंडी से कहती है- "कुछ मत कहो...केवल सुनो...हवाओं के स्वर,लहरों से पतवार के टकराने के स्वर चंडी...प्रेम को जुबान नहीं चाहिए।मैं तुम्हारी ही रहूंगी।पर कहकर इस पल को हलका मत करो।"[9] नारी का मन बहुत कोमल होता है। जो औरत अपने प्रेमी को प्रेम करती है वो चाहे विवाहित हो लेकिन अपने प्रेमी के ऊपर वह अपना सब कुछ लुटा देती है। प्रेम एक ऐसा तत्त्व है जिसे व्यान करने लिए भाषा की आवश्यकता नहीं बल्कि मन के भाव से अभिव्यक्त किया जाता है। नारी प्रेम की गहराई तक जा कर अपना पूरा जीवन प्रेमी के लिए निस्वार्थपूर्ण आर्पित कर देती है। प्रेम में पडा व्यक्ति सुदभुद्र खो बैठता है ओर उसी के इर्द-गिर्द व्यक्ति का जीवन मन्डराता रहता है। प्रेम का स्वरूप बहुत विशाल होता है, जिसकी धारा में व्यक्ति बहता चला जाता है।

पुरूष जाति पुरात्न काल से ही नारी के प्रति कोई-न-कोई भाव रखता आया है। पुरूष नारी के प्रति सदियों से ही आकृषिट रहा है। कई पुरूष नारी के प्रति सच्ची प्रेम भावना रखते है, और कई मात्र अपने लिए उनका इस्तेमाल करते है। उपन्यास में जब डायना चंडीदास की आंखों में झांक कर बोलती है कि वह काम में इतना व्यस्त हो, कहीं उससे प्यार करना तो नहीं भूल गया। तब चंडीदास डायना से कहता है- "राधे तुमने मुझे प्यार करना सिखाया, व्यस्त रहना सिखाया। तुमने मेरी जिंदगी में रोमांच भरा, चुनौती भरी...अब जो मैं हूं वो सृजित हूं...तुमसे गढा गया। तुम मेरी शिल्पकार हो।"[10]

वर्तमान युग के जीवन-दर्शन में परिवर्तन आ रहा है। आज प्रेमी को प्रेमिका के साथ जुडने की प्रेम भावना नहीं रही तथा टूटने का एहसास भी नहीं रहा। आज का प्रेम मन से नहीं मात्र शारीरिक सम्बन्धों का प्रेम रह गया है। पहले समय में नारी प्रेम अपने प्रेमी को आत्मा से किया करती थी। किन्तु आज नहीं। नारी की प्रेम संवेदना में समर्पण, त्याग, सहनशीलता, वीनम्रता होती थी। लेकिन आधुनिक युग में प्रेमिकाएं यह जरुरी नहीं मानती कि प्रेम

की परिणति शादी में हो एंव प्रेम केवल एक ही पुरुष से किया जाता हो। आज की प्रेम संवेदना जीवन मुल्य ना रहकर सिर्फ काम वासना, भूख मिटाने का साधन बन चुका है।

अत: सक्षेप रूप में कहा जा सकता है कि आज भी समाज ने चाहे बहुत तरक्की कर ली है लेकिन फिर भी नारी के प्रति पुरुष का दृष्टिकोण नहीं बदला। आज भी पुरुष नारी को जूती के समान समझता है। वर्तमान युग में भी नारी सुरक्षित नहीं है, पुरुष उसका शारीरिक शोषण कर उनकी संवेदना के साथ खिलवाड करता है। आज भी नारी का बलात्कार, शोषण भारी तादाद में हो रहा है, नारी ना घर में सुरक्षित है ना ही बाहर। नारी को आज भी कमज़ोर तथा उसकी भावना का फायदा उठा कर उनकी संवेदना को पांव तले कुचला जाता है। आज के युग में सच्चा प्रेम तथा प्रेमी के लिए समर्पण की संवेदना मिलना असंम्भव है।

संदर्भ सूची

1) संतोष श्रीवास्त्व, 'टेम्स की सरगम' पृष्ठ- 20
2) 'संतोष श्रीवास्त्व' 'टेम्स की सरगम' पृष्ठ- 114
3) उद्धत-डा.हेमेन्द्र कुमार पानेरी-स्वातंत्रयोत्तर हिन्दी उपन्यास मूल्य-संक्रमण, पृष्ठ-157
4) 'संतोष श्रीवास्त्व' 'टेम्स की सरगम' पृष्ठ- 8
5) 'संतोष श्रीवास्त्व' 'टेम्स की सरगम' पृष्ठ- 121
6) 'संतोष श्रीवास्त्व' 'टेम्स की सरगम' पृष्ठ- 182
7) मणाल पाण्ड,स्त्री देह की राजनीति से देश की राजनीति तक, पृष्ठ-82
8) सं. डा. किशोर सिंह राव, डा. मीरा ए. सक्सेना,मन्नू भंडारी की कथा-यात्रा, पृष्ठ-85
9) 'संतोष श्रीवास्त्व' 'टेम्स की सरगम' पृष्ठ- 9
10) वहीं, पृष्ठ- 37

प्रियंका

रिसर्च स्कॉलर, हिन्दी विभाग, लवली प्रॉफेश्नल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा (पंजाब)